“आंवला”

की व्यावसायिक खेती

बहुगुणी फल

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

परिचय

आंवला एक व्यापारिक महत्व का फल वृक्ष है| औषधीय गुण व पोषक तत्वों से भरपूर आंवले के फल प्रकृति की एक अभूतपूर्व देन है| इसका वानस्पतिक नाम एम्बलिका ओफीसीनेलिस है| आंवला एक बहुपयोगी प्राचीनतम फल है, जिसके गुणों का वर्णन चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, रामायण, कादम्बरी, इत्यादि अनेक ग्रंथों में मिलता है। आंवले को अमर फल, धात्रीफल, अमला, आदि नामों से भी जाना जाता है। औषधीय उपयोग के अतिरिक्त आंवला कई प्रकार के धार्मिक कारणों से भी महत्वपूर्ण है। कार्तिक माह में आंवले के वृक्ष की पूजा और उसकी छाया में भोजन करना शुभ माना गया है। आंवले के नियमित सेवन से शरीर स्वस्थ रहता है क्योंकि आंवले का फल पोषक एवं औषधीय गुणों से भरपूर है। ऐसी मान्यता है कि प्रतिदिन एक आंवला खा कर डाक्टर की जरूरत से बचा जा सकता है।

आंवले की व्यवायिक खेती उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, रायबरेली, जौनपुर, वाराणसी, एवं मिर्जापुर जनपदो में बहुतायत से की जाती है। इसकी खेती बंजर एवं बेकार पड़ी भूमि में भी हो जाती है। इसी कारण से इस का क्षेत्रफल अन्य प्रदेशों जैसे-राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश एवं आन्ध्रप्रदेश में काफी तेजी के साथ बढ़ रहा है।

आंवले के 100 ग्राम गूदे में 500 मिली ग्राम विटामिन सी, 0.2 मिली ग्राम निकोटिनिक अम्ल, 1.2 मिली ग्राम लौह तत्व होता है। इसके अतिरिक्त 0.5% प्रोटीन, 0.1% फैट, 0.7% खनिज, 2.0-3.4% फाइबर, 1.4-2.8% कार्बोहाइड्रेट, 0.05% कैल्शियम एवं 0.02% फॉसफोरस भी आंवले के फलों में पाया जाता है।

औषधीय गुण युक्त होने से आंवले के फलों का त्रिफला चूर्ण एवं च्यवनप्राश आदि आयुर्वेदिक औषधियां बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। प्रचुर (विटामिन सी की मात्रा के कारण स्कर्वी, दांत एवं मसूड़ों, हड्डी, आंख व उदर के अनेक रोगों में उसके फल काफी लाभदायक हैं। आंवले के फलों से मुरब्बा, अचार, चटनी, उडर (चूर्ण), केश तेल, शैम्पू, पाचक व अनेक आयुर्वेदिक औषधियां व्यवसायिक तौर पर बनायी जाती हैं।

आंवले की खेती लगभग सम्पूर्ण भारतवर्ष में की जाती है परन्तु सहिष्णु फल होने के कारण सूखे एवं अनुपजाऊ क्षेत्रों में इसकी सफल खेती की जा सकती है। भारत के शुष्क क्षेत्र, जिसमें राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, ग़ुजरात, तमिलनाडु तथा महाराष्ट्र प्रमुख हैं, में इसकी खेती की अधिक संभावनाएं हैं।

औषधीय उपयोग
आंवले का फल, पाचन संस्था के समस्त रोगों को दूर करता है। पाचन क्रिया अच्छी रहने के कारण व्यक्ति शतायु को प्राप्त करता है। आंवले का फल मूत्र, रक्तशोधक, रूचिकर होनें से यह अतिसार, प्रमेह, रक्तपित्त, अम्लपित्त, अर्श, अजीर्ण, अरूचि तथा श्वास सम्बन्धित रोगों से मुक्ति प्रदान करता है। दृष्टि को तेज करता है। यह त्रिदोष को दूर करने वाला, ह्रदय को बल देने वाला फल है। इसका प्रयोग नेत्र रोगों में अम्ल पित्त, संगंहणी, विरेचन, कब्ज़, पित्त दोष, मंदाग्नि, गठिया, सूजन तथा विभिन्न प्रकार के ज्वरोंको नष्ट करने में किया जाता है।

वानस्पतिक विवरण
आंवले का वानस्पतिक नाम एम्बलिका आफिसीनेलिस है जो यूफ़ोरबियेसी कुल का सदस्य है। इसका वृक्ष मध्यम ऊँचाई का होता है। कलमी पौधों की तुलना में बीजू पौधे अधिक ऊँचे होते हैं जबकि कलमी पौधों में फलन जल्दी प्रारम्भ हो जाता है। उत्तरी भारत में आंवले की पत्तियां सर्दियों में गिर जाती है तथा मार्च-अप्रैल में पत्तियों के साथ ही फूल आते हैं। यद्यपि नर व मादा पुष्प एक ही शाखा पर लगते हैं परन्तु स्वंय वंधता के कारण फलन कम आती है। अच्छी फलत के लिए उपयुक्त (0%) परागण की, व्यवस्था करनी पड़ती है। दक्षिण भारत में आंवले के पेड़ों में जून-जुलाई में।पुष्प आते हैं। विभिन्न किस्मों में नर व मादा पुष्पों की संख्या का अनुपात अलग होता है। नर फूल हल्के पीले रंग के होते हैं जो उप शाखा पर नीचे की ओर होते हैं। मादा फूल हल्के हरे रंग के होते हैं और उपशाखा के ऊपरी भाग में होते हैं। परागण एवं निष्चेचन के बाद भ्रूण ग्रीष्म ऋतु में सुषुप्तावस्था में चले जाते हैं जो जुलाई-अगस्त में वातावरण में नमी पाकर बढ़ने लगते हैं। नवम्बर से जनवरी तक फल परिपक्व हो जाते हैं।

जलवायु एंव भूमि
आंवला एक शुष्क उपोष्ण (जहाँ सर्दी एवं गर्मी स्पष्ट रूप से पड़ती है) क्षेत्र का पौधा है| परन्तु इसकी खेती उष्ण जलवायु में भी सफलतापूर्वक की जा सकती है| भारत में इसकी खेती समुद्र तटीय क्षेत्रों से 1800 मीटर ऊँचाई वाले क्षेत्रों में सफलतापूर्वक की जा सकती है| जाड़े में आंवले के नये बगीचों में पाले का हानिकारक प्रभाव पड़ता है|

परन्तु एक पूर्ण विकसित आंवले का वृक्ष 0 से 46 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान तक सहन करने की क्षमता रखता है| गर्म वातावरण, पुष्प कलिकाओं के निकलने हेतु सहायक होता है| जबकि जुलाई से अगस्त माह में अधिक आर्द्रता का वातावरण सुसुप्त छोटे फलों की वृद्धि हेतु सहायक होता है| वर्षा ऋतु के शुष्क काल में छोटे फल अधिकता में गिरते हैं तथा नए छोटे फलों के निकलने में देरी होती है|

उपयुक्त जलवायु
आंवला एक शुष्क उपोष्ण (जहाँ सर्दी एवं गर्मी स्पष्ट रूप से पड़ती है) क्षेत्र का पौधा है| परन्तु इसकी खेती उष्ण जलवायु में भी सफलतापूर्वक की जा सकती है| भारत में इसकी खेती समुद्र तटीय क्षेत्रों से 1800 मीटर ऊँचाई वाले क्षेत्रों में सफलतापूर्वक की जा सकती है| जाड़े में आंवले के नये बगीचों में पाले का हानिकारक प्रभाव पड़ता है|

परन्तु एक पूर्ण विकसित आंवले का वृक्ष 0 से 46 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान तक सहन करने की क्षमता रखता है| गर्म वातावरण, पुष्प कलिकाओं के निकलने हेतु सहायक होता है| जबकि जुलाई से अगस्त माह में अधिक आर्द्रता का वातावरण सुसुप्त छोटे फलों की वृद्धि हेतु सहायक होता है| वर्षा ऋतु के शुष्क काल में छोटे फल अधिकता में गिरते हैं तथा नए छोटे फलों के निकलने में देरी होती है|

भूमि का चयन

आंवला एक सहिष्णु फल है तथा बलुई भूमि से लेकर चिकनी मिट्टी तक में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है| गहरी उर्वरा बलुई दोमट मिट्टी इसकी खेती हेतु सर्वोत्तम पायी गई है| बंजर, कम अम्लीय एवं उसर भूमि (पी एच मान 6.5 से 9.5, विनिमय शील सोडियम 30 से 35 प्रतिशत एवं विद्युत चालकता 9.0 मिलीलीटर प्रति सेंटीमीटर तक) में भी इसकी खेती सम्भव है| भारी मृदायें तथा ऐसी मृदायें जिनमें पानी का स्तर काफी ऊँचा हो, इसकी खेती हेतु अनुपयुक्त पायी गई है|

खेत की तैयारी

आंवला की खेती के लिए उसर भूमि में गड्ढो की खुदाई 10 फुट x 10 फुट, 10 फुट x 15 फुट या 15 फुट x 15 फुट पर की जाती है। पौधा लगाने के लिए 1 घनमिटर आकर के गड्ढे खोद लेना चाहिए| गड्ढों को 15-20 दिनों के लिए धूप खाने के लिए छोड़ देना चाहिए। यदि कड़ी परत अथवा कंकर कि परत हो तो उसे खोद कर कंकर को अलग कर देना चाहिए, अन्यथा बाद में पौधों के वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है| यदि पानी की किलत है, तो मई में बरसात के मौसम में इन गड्ढो में पानी भर देना चाहिए| प्रत्येक गड्ढे में 20 किलोग्राम जैविक खाद (केंचुवे की खाद या कम्पोस्ट खाद) 5 किलोग्राम बालू, 3 किलोग्राम जिप्सम, 3 किलोग्राम नीम की खली और 500 ग्राम ट्रायकोडर्मा पाउडर मिलाना चाहिए| गड्ढे भराई के 15 से 20 दिन बाद ही पौधे का रोपण किया जाना चाहिए| गड्ढे जमीन की सतह से 10 से 15 सेंटीमीटर ऊँचाई तक भरना चाहिए, और इसमें भी गड्ढे भराई के 15 से 20 दिन बाद ही पौधे का रोपण किया जाना चाहिए|

आंवला की किस्मे

आंवला की बनास्सी, चकैया, कृष्णा, कंचन, नरेन्द्र आंवला 6, नरेन्द्र आंवला 7, बलवंत आदि प्रमुख उन्नत किसमें हैं। गुजरात में आनन्द 2 तथा तमिलनाडु में बी. एस व्यावसायिक खेती के लिए संस्तुत हैं। कृषि संस्थाओं ने कुछ नयी किस्मों का चयन किया है, जो इस प्रकार है, जैसे- कृष्णा (एनए- 4), नरेन्द्र- 9 (एनए- 9), कंचन (एनए- 5), एनए- 6, नरेन्द्र- 7 (एनए- 7), और नरेन्द्र- 10 (एनए-10), BSR-1 (भवाणीसागर) आदि प्रमुख है|आंवला की कुछ उन्नत किस्मों का विवरण निम्न प्रकार है:-

चकैया- यह एक पछेती किस्म हैं इसके फल अपेक्षाकृत छोटे (30-35 ग्राम प्रतिफल) और ऊपर से कुछ चपटे होते हैं तथा उनके डंठल बहुत छोटे होते हैं। फल का गूदा रेशायुक्त एंव कठोर होने के कारण परिरक्षण एंव भंडारण के लिए यह एक अच्छी किस्म है परन्तु मुरब्बा एंव कैण्डी बनाने के लिए उपयुक्त नहीं पायी गयी है।

बनारसी- फलों का आकार बड़ा (40-50 ग्राम) एवं गूदा मुलायम होता है। मादा फूलों की संख्या कम होने के कारण इसमें फलत कम होती है। फलों की भण्डारण क्षमता कम होती है। गूदे में रेशे की मात्रा कम होने के कारण इसके फल आचार एंव मुरब्बा बनाने के लिए बहुत उपयुक्त पाये गये हैं।

कृष्णा- यह बनारसी किस्म से चयनित एक अगेती किस्म है जिसका फल बड़ा (40-50 ग्राम), आकर्षक, गोल, ऊपर से चपटा तथ लाल थब्बेदार होता है। फल का गूदा रेशाहीन होता है जिससे इसके फलों से कई प्रकार के परिरक्षित पदार्थ बनाये जा सकते हैं। अधिक फूल आने से इसकी उत्पादन क्षमता बनारसी किस्म की अपेक्षा अधिक होती है।

कंचन- यह चकड़या किस्म से चयनित की गई एक पछेती किस्म है। इनमें मादा फूलों की संख्या अधिक (4.7%) होने के कारण फल उत्पादन क्षमता अधिक होती है। फल मध्यम गोल एंव हल्के पीले होते हैं। गूदा कुछ रेशायुक्त होने के कारण इसके फल अचार तथा अन्य उत्पाद बनाने के लिए बहुत उपयुक्त हैं।

नरेन्द्र आंवला 6- यह चकड़या से चयनित की गई किस्म है जो मध्यम समय में तैयार होती है। फलों का आकार मध्यम गोल, चमकदार तथा गूदा रेशाहीन होता है। मादा फूलों की संख्या कम होने के कारण मध्यम उत्पादन क्षमता होती है। इसके फल कैंडी, जैम व मुरब्बा बनाने के लिए उपयुक्त हैं।

नरेन्द्र आंवला 7- यह फांसिस (हाथी झूल) किस्म के बीजू पौधों से चयनित किस्म है जो ऊतक क्षय रोग से मुक्त है। इसके पौधे दो वर्ष में ही फल देने लगते हैं। यह किस्म शुष्क क्षेत्र में व्यावसाथिक खेती के लिए उपयुक्त है। इस किस्म के फल नवम्बर-दिसम्बर में पक कर तैयार हो जाते हैं। फल आकार में बड़े (40-50 ग्रम प्रतिफल) एंव गोल, चिकनी सतह वाले हल्के पीले रंग के होते हैं। फल उत्पादन एंव गुणवत्ता की दृष्टि ये यह एक अच्छी किस्म है।
बलवंत- यह बनारसी किस्म के पौधों से चयनित अगेती किस्म है। इसके पौधों में क्षारियता सहने की क्षमता अधिक है। फलों का आकार मध्यम से बड़ा (40-50 ग्राम) व गोल-चपटा होता है तथा उनके गूदे में रेशे की मात्रा कम होती है।

(महत्वपूर्ण नोट: परागण और अधिकतम उपज के उद्देश्य के लिए 2:2:1 के अनुपात में कम से कम 3 किस्मों को आंवले के पौधे रोपें। उदा. एक एकड़ में, बेहतरीन परिणाम के लिए NA-7 के 40 ग्राफ्ट, कृष्णा के 40 ग्राफ्ट और कंचन के 20 ग्राफ्ट लगाए।)

खाद एवं उर्वरक

बंजर भूमि में जैविक पदार्थ एवं पोषक तत्वों का अधिक प्रयोग आवश्यक है। एक वर्ष पुराने पौधों को 10 किग्रा. गोबर की खाद, 100 ग्राम आर्गेनिक नाइट्रोजन, 50 ग्राम आर्गेनिक फास्फोरस तथा 75 ग्राम आर्गेनिक पोटाश देना चाहिए। अगले दस वर्षो तक उपरोक्त मात्रा को प्रति वर्ष इसी अनुपात में बढ़ाते रहना चाहिए। इस प्रकार दसवें वर्ष में दी जाने वाली खाद एवं उर्वरक की मात्रा 1.0 क्विंटल गोबर की खाद, 1000 ग्राम आर्गेनिक नाइट्रोजन, 500 ग्राम आर्गेनिक फास्फोरस तथा 750 ग्राम आर्गेनिक पोटाश प्रति वृक्ष होगी। आगे के वर्षो में भी फरवरी माह के दौरान इसी निश्चित मात्रा का प्रयोग प्रति वर्ष किया जाना चाहिए।

सिंचाई

पहली सिंचाई पौध रोपण के तुरन्त बाद करनी चाहिए उसके बाद आवश्यकतानुसार पौधों को गर्मियों में 10-12 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करनी चाहिए। फलत प्रारम्भ हो जाने पर सुसुप्तावस्था (दिसम्बर-जनवरी) में तथा फूल आने पर मार्च में सिंचाई नहीं करनी चाहिए। निराई-गुड़ाई पौधों को स्वस्थ रखने एवं खाद तथा उर्वरकों को दुरूपयोग से बचाने के लिए समय-समय पर खरपतवार निकालकर थाले की हल्की गुड़ाई कर देनी चाहिए। फसल सुरक्षा आंवले की फसल में मुख्य रूप से निम्नलिखित कीट एवं बीमारियों से नुकसान पहुँचता है।

प्रमुख कीट

1. छाल खाने वाला कीट: इस कीट की सुंडियॉ शाखाओं के जोड़ पर सूराख बनाकर अन्दर उत्तक को खाकर अवशेष बाहर निकालती हैं, जो सूराख के पास बुरादे जैसा पड़ा रहता है। इसकी रोकथाम के लिए सूराख को सायकिल की तीली से साफ करके रूई को पेट्रोल या मिट्टी के तेल में भिगोकर सूराख में भर देना चाहिए या किसी कीटनाशी के 0.1 प्रतिशत घोल अन्दर ड़ालकर सूराख को गीली मिट्टी से भर देना चाहिए।

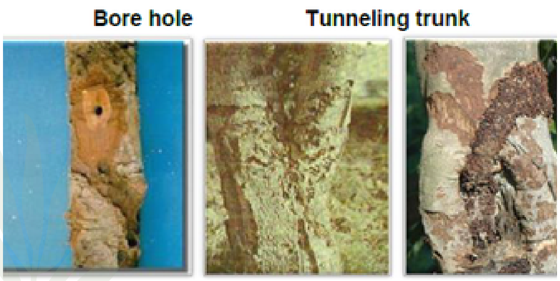

2) माहू: इस कीट का प्रकोप जब मौसम में नमी हो या बादल छाये हों तो अधिक होता है। यह कोमल भागों एवं छोटे-छोटे फलों के रस को चूसकर कमजोर बना देते है। इसकी रोकथाम के लिए नीम ऑइल 2 लीटर, 100 लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अन्तराल पर दो छिडकाव कर देना चाहिए।

3) शूट गाल मेकर (गांठ बनाने वाला कीट): इस कीट की सुंडियॉ नये टहनियों के सिरें पर प्रवेश करके वृद्धि को रोक देती है। इसकी रोकथाम के लिए प्रभावित टहनियों को 5-7 सेमी. नीचे से काटकर निकाल देते हैं तथा इसे कहीं गड्ढे में डालकर जला देते हैं।

4)स्केल कीट: इस कीट का प्रकोप होने पर टहनियॉ, फल आदि सभी प्रभावित होती हैं। जिससें पूरा का पूरा पौधा सूख जाता है। इसकी रोकथाम के लिए गोमूत्र या नीम ऑइल पानी में मिलकर छिड़काव कर देना चाहिए।

प्रमुख बीमारियॉ

1) आंवला रस्ट:
यह एक कवक जनित व्याधि है। पत्तियों पर लाल रंग के गोल एवं अण्ड़ाकार धब्बे बन जाते है, जो बाद में फलों को भी प्रभावित कर देते है। इस रोग के कारण फलों का भाव कम हो जाता है। इसकी जैविक रोकथाम के लिए गोमूत्र 1 लीटर, 10 लीटर पानी में 100 ग्राम ट्राईकोडर्मा पाउडर मिलाकर 2 छिड़काव मध्य सितम्बर से अक्टूबर में 15 दिन के अन्तराल पर करना चाहिए।

2) ऊतक क्षय रोग:
इसका प्रकोप मुख्य रूप से फ्रान्सिस किस्म में अधिक होता है। जिससे कभी-कभी 60-80 प्रतिशत फल अन्दर से काले पड़कर गिर जाते है। इसकी रोकथाम के लिए 0.6 प्रतिशत बोरेक्स का दो छिड़काव अप्रैल व जुलाई माह मे करना चाहिए।

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

पौध रोपण

1.5 से 2 फुट ऊंचाई वाले आंवले के पौधों को जुलाई से अगस्त या फरवरी के महीने में तय दूरी पर रोपाई करते हैं| पौधों की रोपाई वर्गाकार विधि से करते हैं| जिसमें पौधों से पौधों एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी बराबर रखी जाती है| प्रत्येक पौधों के वर्ग के बीच में एक अन्य पौधा भी लगाया जा सकता है| इस विधि को पूरक विधि या क्विनकन्स भी कहते हैं| इससे बागवान अधिक लाभ के अलावा खाली पड़े क्षेत्र का भी सही उपयोग कर सकते हैं|

संधायी एवं छंटाई

आंवला के पौधों को मध्यम ऊँचाई तक विकसित करने हेतु उनको ट्रैनिंग और प्रूनिंग करना चाहिए| नये पौधों को जमीन की सतह से लगभग 75 सेंटीमीटर से एक मीटर तक बढ़ने देना चाहिए| तदुपरान्त शाखाओं को निकलने देना चाहिए ताकि पौधों के ढाँचे का अच्छे से विकास हो सके| पौधे को गोलाकार आकार में विकसित करे|

पलावर (मल्चिंग)

आंवला की बाग स्थापन में जैविक अवशेषों द्वारा अवरोध परत करने से अच्छे परिणाम मिले हैं| विभिन्न प्रकार के पदार्थों जैसे पुआल, केले के पत्ते, ईख की पत्ती एवं गोबर की खाद से मल्चिंग करने पर अच्छी सफलता प्राप्त हुई है| जैविक अवशेषों से कई वर्षों तक मल्चिंग करने से खरपतवार नियंत्रित रहते हैं, जड़ों का तापमान नियंत्रित रहता है और जैविक पदार्थ सड़ कर भूमि की उर्वराशक्ति तथा जल धारण करने की क्षमता को बढ़ाते हैं| इसके अतिरिक्त ये हानिकारक लवणों को जमीन की सतह पर आने से भी रोकता है| इस प्रकार, यह उसर भूमि में हानिकारक लवणों के प्रभाव को कम करते हैं| साथ ही मल्चिंग करने से पौधों की जड़ों के पास केंचुओं एवं लाभकारी सूक्ष्म जीवों की संख्या में वृद्धि भी होती है|

अन्तर्वती फसलें

फलदार पेड़ को फलधारण में 2-3 साल का अवधि होता है यह एक प्रमुख समस्या है| जिसकी वजह से किसान अधिक क्षेत्र में फलों का रोपण नहीं कर पाते हैं| आंवला गहरी जड़ों वाला एवं छितरी पत्तियों वाला एक पर्णपाती वृक्ष है| साल के तीन से चार माह पेड़ पर पत्तियाँ नहीं रहती हैं| तथा शेष माह में छितरी पत्तियाँ होने को कारण भूमि पर पर्याप्त मात्रा में सूर्य का प्रकाश उपलब्ध रहता है| परिणामतः इसके साथ सहफसली खेती की अनेक सम्भावनायें हैं| फलों में अमरूद, करौंदा, सहजन एवं बेर, सब्जियों में लौकी, भिण्डी, फूलगोभी, धनिया, फूलों में ग्लैडियोलस तथा गेंदा एवं अन्य|

औषधिय और सुगंधित पौधे आंवला के साथ सहफसली खेती के रूप में काफी उपयुक्त पाये गये हैं| कुछ सह फसली खेती की फसलें इस प्रकार है, जैसे-

आंवला + सहजन + सफ़ेद मूसाली/ तूलसी
आंवला + सहजन + काली हल्दी
आंवला + सहजन + स्टीविया
आंवला + सहजन + अलोवेरा / शतावरी
आंवला + सहजन + तूलसी/ आश्वगंधा/ चीया बीज

पुष्पन एवं फल वृद्धि

आंवला में फूल बसन्त ऋतु में आते हैं| फूलों का खिलना मार्च के अंतिम सप्ताह से शुरू होता है और तीन सप्ताह तक चलता है| बीजू किस्मों में पुष्पन की क्रिया पहले प्रारम्भ होती है, जबकि उन्नत किस्मों में पुष्पन बाद में होता है| दक्षिण भारत में पुष्पन साल में दो बार होता है| पहली बार फरवरी से मार्च में और दूसरी बार जून से जुलाई में|

पहली बार वाले पुष्प अच्छी फलन देते हैं, परन्तु दूसरी बार के पुष्प कम फलन देते हैं| आंवला एक पर-परागित पौधा है| इसलिए इनके परागण में मधुमक्खियाँ या अन्य मित्र किट महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं|

फलों की परिपक्वता

आंवला के फलों की परिपक्वता कई कारकों पर निर्भर करती है| जैसे: स्थिति, जलवायु, मृदा प्रकार, नमी, इत्यादि| बनारसी एवं कृष्णा किस्मों में परिपक्वता फल लगने के 17 से 18 सप्ताह बाद आती है, जबकि कंचन और फ्रांसिस में 20 सप्ताह का समय लगता है| चकैया किस्म, फल लगने के 23 सप्ताह बाद परिपक्व होते हैं|

तुड़ाई

आंवला के फलों की तुड़ाई हाथ से करते हैं| परन्तु यह क्रिया बड़े वृक्षों में सम्भव न होने के कारण, बांस से बनी सीढ़ियों पर चढ़ कर तुड़ाई की जाती है| फलों को प्रातःकाल में तोड़ना चाहिए एवं प्लास्टिक के क्रेट्स में रखना चाहिए| फलों को तोड़ते समय जमीन पर नहीं गिरने देना चाहिए अन्यथा चोटिल फल पैकिंग एवं भण्डारण के समय सड़ कर अन्य फलों को भी नुकसान पहुँचाते हैं|

पैदावार

आंवला का कलमी पौधा रोपण से तीसरे साल तथा बीजू पौधा 6 से 8 साल बाद फलन देना प्रारम्भ कर देता है| कलमी पौधा 10 से 12 साल बाद पूर्ण फलन देने लगता है तथा अच्छे प्रकार से रख-रखाव के द्वारा 60 से 75 साल तक फलन देता रहता है| आंवला की विभिन्न किस्मों की उपज में भिन्नता पायी जाती है| बनारसी कम फलन देने वाली, फ्रान्सिस एवं नरेन्द्र आंवला- 6 औसत फलन देने वाली, कंचन एवं नरेन्द्र आंवला- 7 अत्यधिक फलन देने वाली किस्में हैं|

आंवले की फलन को कई कारक प्रभावित करते हैं| जैसे किस्म की आन्तरिक क्षमता, वातावरणीय कारक एवं प्रबंधन तकनीकें इत्यादि| एक पूर्ण विकसित आंवले का वृक्ष एक से तीन क्विंटल फल देता है| इस प्रकार से 15 से 20 टन प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है|

श्रेणीकरण

आंवला के फलों को तीन श्रेणियों में उनके आकार, भार, रंग एवं पकने के समय के आधार पर बाँटा जा सकता है| बड़े आकार के फल (व्यास 4 सेंटीमीटर से अधिक) को मुरब्बा बनाने हेतु प्रयोग किया जाता है, मध्यम आकार के फलों को अन्य परिरक्षित पदार्थ बनाने में एवं छोटे आकार के फलों को औषधीय उत्पाद जैसे च्यवनप्राश, त्रिफला इत्यादि बनाने में प्रयोग किया जाता है| अपरिपक्व, चोटिल एवं व्याधिग्रस्त फलों को फेंक देना चाहिए|

गुणवत्ता

फलों के भण्डारण क्षमता बढ़ाने हेतु 1 प्रतिशत कैल्शियम नाइट्रेट के घोल का दो छिड़काव फल तोड़ने के 20 एवं 10 दिन पूर्व करना चाहिए। इसके अतिक्ति 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट 0.1 प्रतिशत थायो यूरिया के दो छिड़काव (मध्य मई एवं मध्य जून) करने से उपज एवं फलों की गुणवत्ता में वृद्धि होती है।

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

प्रति एकर खर्चे

ब्योरे	संख्या या वजन	लागत (रु.)
आंवला के पौधे	200 पेड़ @ रु.150/- प्रति पौध	30,000
जैविक खाद	जैविक उर्वरक, खाद, कीटनाशक, फफूंदीनाशक, फल आकार व संख्या विकासक और ग्रोथ बूस्टर	40,000
अन्य खर्चे	ट्रांसपोर्टेशन, रोग और किट प्रबंधन, अन्य देखभाल और रखरखाव के लगने वाले खर्चे	75,000
संपूर्ण खर्च	**Rs.145,000/-**	

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd

प्रति एकर आय
(200 पेड़ से मिलने वाला उत्पादन)

Farmer's e-Buddy

उत्पादन वर्ष	कुल उत्पादन- 100 पौधे	बाइबैक रेट प्रति किलो	कुल आय
तृतीय	2000 किलो	रु.20 प्रति किलो	रु.40,000/-
चौथा	4000 किलो	रु.25 प्रति किलो	रु.100,000/-
पंचवा	6000 किलो	रु.25 प्रति किलो	रु.150,000/-
छटा	7000 किलो	रु.25 प्रति किलो	रु.175,000/-
सातवा	9000 किलो	रु.30 प्रति किलो	रु.270,000/-
वर्ष 8 से 30 तक	प्रत्येक वर्ष 10000 किलो	रु.30 प्रति किलो	रु.300,000/- प्रति वर्ष (30 साल तक)

आंवला की एक एकड़ खेती से मिलने वाली कुल आय

- पहले 7 साल तक कुल- 735,000/-
- 8 वे साल से 20 साल तक (300,000/- प्रति वर्ष) = 6, 900,000/-

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

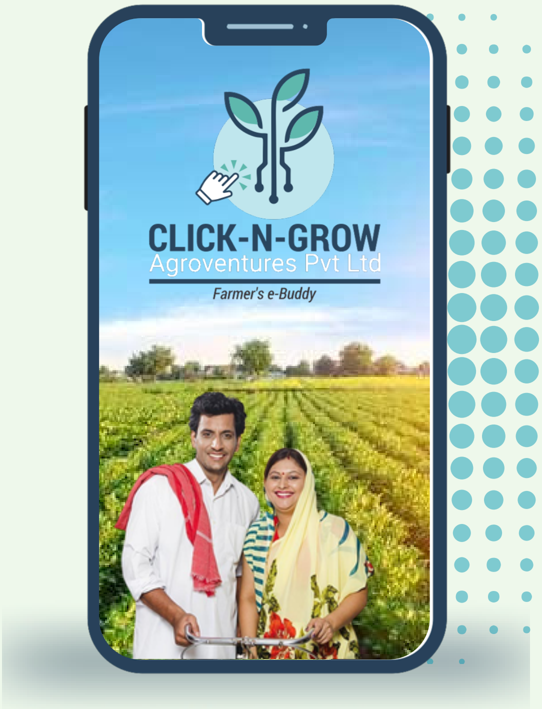

CLICK-N-GROW AGROVENTURES PVT. LTD.

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

eKisanZone Farmer's e-Buddy | MITCAD | Contract Farming | KisanSAT AGRO ADVISORY SERVICES | Agri Export Grow Farmer, Grow india

INTERLINKED FARM SOLUTIONS AT ONE PLACE

CONTACT DETAILS

Corporate Office Maharashtra
C/17-18, Dakshata Nagar Complex, Opp New SP Office, Sindhi Camp, Akola, Maharashtra- 444001

Ms. Karishma Srivastava
+91-7028301210

Mr. Bhushan Deshmukh
+91-9096338660

Mr. Amol Khandare
+91-7775008660,

info@ekisanzone.com

info.clickngrow@gmail.com

ekisanzone1@gmail.com

www.ekisanzone.com

www.kisansat.com